“विपिन बिहारी के कथासाहित्य का अनुशीलन”

प्रास्ताविक :

विपिन बिहारीजी हिंदी के उन युवा कहानीकारों में से एक है जिन्होंने कुछ वर्षों में ही अपनी निष्ठा एवं लगन से साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाई है। वे दलित साहित्य के चर्चित कथाकार है। वे कई दशकों से निरंतर लिख रहे हैं। उन्होंने अपने कथासाहित्य द्वारा दलित साहित्य को समृद्ध किया है। अधिकांश दलित साहित्यकार अभी भी अतीत की दु:खद स्थितियों से उबर नहीं पाए है। बिहार के उपेक्षित मनुष्य को विपिन बिहारीजी ने अपने कलम का विषय बनाया। यह उनके सामाजिक प्रतिबद्धता का ही लक्षण है। दलित समाज और उसकी अस्मिता उनके भीतर बसी हुई है। इसलिए दलित लेखन की एक खास पहचान उनमें हैं। उन्होंने हिंदी दलित कथा साहित्य में अपनी प्रतिभा से अपना परिचय करा दिया है।

दलित कथासाहित्य के क्षेत्र में विपिन बिहारी का नाम उन अग्रणी में गिना जा सकता है, जिन्होंने नारी की अर्न्तकथा को और दलित समाज के उत्पीड़न को सिद्दत के साथ महसूस किया है और अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। वे दलित और स्त्री के सच्चे पक्षधर है। विपिन बिहारी के पास सामाजिक अंतर्विरोधों को पहचानने की गहरी अंतर्दृष्टि है और यह अंतर्दृष्टि उन्हें अंबेडकरवादी विचारधारा से मिली है। इसलिए विपिन बिहारी पहले ऐसे अंबेडकरवादी कथाकार हैं, जिन्होंने सामाजिक अंतर्विरोधों की, सामाजिक बदलाव की और सामाजिक संबंधों की ठीक-ठीक पहचान की है, जिनसे सामाजिक संबंधों में बदलाव आता है। उन्होंने सामाजिक संबंधों को बड़ी सिद्दत से महसूस किया और अपने कथासाहित्य में अभिव्यक्त किया है। विपिन बिहारी ऐसे पहले कथाकार है, जिन्होंने समाज की दो विरोधी शक्तियों की ठीक-ठीक पहचान करके और उन्हें एक-दूसरे के आमने-सामने रखकर कहानियों में बुनाया है। बिहारी की इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इनमें समाज की वर्णीय और वर्गीय शक्तियों की पहचान है और वह चेतना उन्हें मार्क्सवाद से नहीं बल्कि अंबेडकरवाद से मिली है।

बिहारीजी की कहानियाँ सामाजिक अंतर्विरोधों को दबाती नहीं है बल्कि उन्हें और तेज करके और आगे ले जाती है और नये सामाजिक विकल्पों को पेश करती है। जो एक नया समाज बनाने के लिए बहुत ही जरूरी है। उनकी कहानियाँ अंबेडकरवादी कहानियाँ कहलाती है। बिहारी कहानियाँ बनाते नहीं तो उन्हें बुनाते हैं। इनकी बुनावट में कसावट है, कहानी की वास्तविकता इनमें ताजगी भरती है और पाठकों के मन में संवेदनाओं को जगाती है।

अन्य दलित साहित्यकारों जैसी विपिन बिहारी को प्रतिष्ठा भले ही न मिली हो परंतु जिस निष्ठा और समर्पित भावना से दलित साहित्य सृजन में लगे हुए हैं, उन पर अनायास ही ध्यान जाता है। 'आऊटलुक' के मार्च 2012, अंक में दलित कहानीकारों पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी, जिसमें विपिन बिहारी दलित कहानीकार के रूप में चौथे स्थान पर है। स्पष्ट है कि झारखंड जैसे पिछड़े और सुविधाविहिन इलाके में रेल सेवा में कार्यरत रहकर भी उन्होंने हिंदी दलित साहित्य के क्षितिज पर अपनी उपस्थिती दर्ज की है। हिंदी को बेहतरीन कहानियाँ दी है और एक कहानीकार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई है।

कहानियों के अतिरिक्त उन्होंने कविताएँ, गजल, उपन्यास और लघुकथाएँ भी लिखी है। बीच-बीच में व्यंग्य जैसी कठिन विधा पर भी अपनी लेखनी चलायी। बिहारीजी अन्य विधाओं पर निरंतरता न रखते हुए कहानियों पर ही अपनी निरंतरता बनाते है, ऐसा क्यों? तो वे कहते हैं कि अन्य विधाओं को वे पूर्णत: अभिव्यक्त नहीं कर पाते और उन्हें कहानियों में अभिव्यक्ति की संभावनाएँ अधिक लगती है।

विषय-चयन की प्रेरणा :

मुझे छात्र जीवन से ही कथासाहित्य के प्रति रूची रही है। मेरे पढ़ने में विपिन बिहारी की कई कहानियाँ आयी। उनकी कहानियाँ काल संपृक्त और लोकसंपृक्त हैं। उनकी कहानियों में सामाजिक और वैचारिक प्रतिबद्धता है। इस कारण मैंने उनकी कहानियों और उपन्यासों को सूक्ष्मता से पढ़ा। मेरे मन में उनके कथासाहित्य का भावविश्व निर्माण हुआ और फिर मन में बात आयी की, इसे शोध का विषय क्यों न बनाए! इस बारे में मार्गदर्शक डॉ.मनोहर भंडारे से कई बार विचार-विमर्श हुआ। उसकी फलश्रुती "विपिन बिहारी के कथासाहित्य का अनुशीलन" नामक विषय का चयन हुआ।

विषय का महत्त्व :

भारतीय समाज वर्णाश्रित समाज है, जिस कारण लोकतंत्र में भी सामाजिक न्याय की प्रक्रिया, सामान्य मनुष्य तक नहीं जाती है। उस उपेक्षित दलित मनुष्य को विपिन बिहारी ने अपने लेखन का विषय बनाया। उनके कथासाहित्य में केवल दलित उत्पीड़न, अपमान या अस्पृश्यता का ही परिचय नहीं होता है, बल्कि उन मुश्किल हालात में जीनेवाले जुझारू पात्र अपने अस्तित्व को स्थापित कर पुरानी व्यवस्था को नकारते हैं। इसी बिंदू को विपिन बिहारी ने अपने लेखन का केंद्र बनाया है। अर्थात् समाजशास्त्र में जिस पद्धति से विभिन्न स्तरों का अध्ययन किया जाता है उसी प्रकार बिहार जैसे उपेक्षित राज्य में उपेक्षित मनुष्य का पक्ष लेते हुए उसके शोषण के विभिन्न स्तरों को चित्रित करते हैं। साथ ही वहाँ की सामाजिक संरचना को गंभीरता के साथ अपने कथासाहित्य में व्यक्त करते हैं। इस कारण इनके साहित्य का अपना अलग महत्त्व है। बिहार के समाज को समझना हो तो विपिन बिहारी के साहित्य को पढ़ना होगा। वैसे उनके साहित्य का समाजशास्त्रीय पद्धति से भी स्वतंत्र अध्ययन हो सकता है। उपेक्षित मनुष्य को चित्रित करनेवाले ऐसे उपेक्षित दलित साहित्यकार पर शोध होना अपने आप में एक अलग महत्त्व है।

शोध विषय के उद्देश :

1) विपिन बिहारी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व को समझना है।
2) विपिन बिहारी के कथासाहित्य का कथ्यगत अध्ययन करना।
3) उनके कथासाहित्य में चित्रित दलित, मजदूर और स्त्री की समस्याओं को समझना।
4) विपिन बिहारी के लेखन पर के प्रभाव को समझना।
5) विपिन बिहारी के कथासाहित्य का शिल्पगत अध्ययन करना।

अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन :

वर्तमान समय में अनुसंधान करते समय अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन करना शोध के लिए आवश्यक माना जा रहा है क्योंकि साहित्य केवल साहित्य नहीं होता है। वैसे साहित्य और समाज का अन्तर्संबंध होता है। विपिन बिहारी के साहित्य को समझना है तो वहाँ की सामाजिक संरचना को समझना होगा। सामाजिक संरचना को समझना है तो सामाजिक इतिहास को समझना होगा तभी विपिन बिहारी के साहित्य को हम गंभीरता से समझ सकते हैं। इसलिए प्रस्तुत शोध विषय अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन में आता है।

कार्यरत अनुसंधान :

1) सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर का एक शोध छात्र अनंत शरद कांबले, संजय नवलेजी के शोधनिर्देशन में 'विपिन बिहारी के साहित्य में चित्रित दलित जीवन' विषय पर शोध कार्य कर रहा है।

2) मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई की कल्पना शेवाले नामक शोध छात्रा ने 'आधे पर अंत' कहानीसंग्रह पर एम.फिल. की उपाधि प्राप्त की है।

विषय की मौलिकता :

प्रस्तुत शोध के पूर्व इस शीर्षक पर किसी ने भी, कहीं पर भी अनुसंधान नहीं किया है, इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय की अपनी मौलिकता है।

विषय की व्याप्ति और सीमा :

कोई भी कार्य सुचारू रूप से होने के लिए उसकी अपनी सीमा और सुनियोजन होना चाहिए। इसी कारण, मैंने विपिन बिहारी के कथासाहित्य तक विषय को सीमित रखा है, किंतु विपिन बिहारी के कथासाहित्य का विभिन्न कोनों से सूक्ष्म और गंभीर अध्ययन करना आवश्यक समझा है। विपिन बिहारी ने अब तक दस कहानीसंग्रह और चार उपन्यास लिखे हैं। इन कथासाहित्य का सूक्ष्मता से अध्ययन करना शोध की व्याप्ति है।

अनुसंधान की दृष्टि से मैंने इस शोध को निम्नलिखित षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया है-

प्रथम अध्याय : विपिन बिहारी का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

1.1 व्यक्तित्त्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 शिक्षा

1.1.3 विवाह

1.1.4 परिवार

1.1.5 मित्र

1.1.6 रुचियाँ

1.1.7 सम्प्राप्ति

1.1.8 पुरस्कार तथा सम्मान

1.1.9 स्नातक के समय आयी कठिनाइयाँ

1.1.10 साहित्य पर प्रभाव

1.2 कृतित्त्व

1.2.1 कहानीसंग्रह

1.2.2 उपन्यास-साहित्य

1.2.3 लघुकथा संग्रह

1.2.4 सहयोगी कहानीसंग्रह

1.2.5 सहयोगी कवितासंग्रह

1.2.6 सहयोगी लघुकथा संग्रह

1.2.7 सहयोगी व्यंग्य संग्रह

1.2.8 संपादन

1.3 साहित्यिक विशेषताएँ

द्वितीय अध्याय : विपिन बिहारी के कथासाहित्य का कथ्यगत अध्ययन

2.1 बोझमुक्त (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.1.1 दौड़

2.1.2 दंगल

2.1.3 युद्धरत

2.1.4 कुलीन चेहरा

2.1.5 बाद का सच

2.1.6 दरार

2.1.7 जड़

2.1.8 मैं पढ़ूँगी

2.1.9 ऐसा भी

2.1.10 तराश

2.1.11 बोझमुक्त

2.2 तिलस्म (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.2.1 महाठगिनी

2.2.2 साँप

2.2.3 एनकाउंटर

2.2.4 विद्रोह

2.2.5 अकाल

2.2.6 सत्याग्रह

2.2.7 ओऽम

2.2.8 आग लगे मुए ठंड को

2.2.9 अंतर्कथा

2.2.10 उसका खेल

2.2.11 तिलस्म

2.3 आगे रास्ता बंद है (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.3.1 आगे रास्ता बंद है

2.3.2 शर्त

2.3.3 जयकारियाँ

2.3.4 बोझ

2.3.5 बिवाइयाँ

2.3.6 फतवे

2.3.7 रंगासियार

2.3.8 थूकदान

2.3.9 सिपाहसालार

2.4 पुनर्वास (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.4.1 सीमाएँ

2.4.2 कीर्तन मण्डली

2.4.3 प्रतिकार

2.4.4 आमने-सामने

2.4.5 काँच

2.4.6 समयचेत

2.4.7 पुनर्वास

2.5 आधे पर अंत (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.5.1 तीर्थयात्रा

2.5.2 पहचान

2.5.3 पत्थर की लकीर

2.5.4 मुक्का

2.5.5 षड्यंत्र

2.5.6 कठपुतली

2.5.7 बदस्तुर

2.5.8 आधे पर अंत

2.6 अपना मकान (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.6.1 हताहत

2.6.2 अरे ये तो जासो है

2.6.3 डाकिनी

2.6.4 पतुरिया

2.6.5 अफसर

2.6.6 तलाश एक अदद मर्द की

2.6.7 कद

2.6.8 पगडंडी

2.6.9 वधस्थल

2.7 राजमार्ग पर गोलीकांड (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.7.1 वेतन मिलने दो

2.7.2 कंगाल

2.7.3 चौंध

2.7.4 विधर्मी

2.7.5 हिंसक

2.7.6 एक डर होते हुए

2.7.7 राजमार्ग पर गोलीकांड

2.7.8 प्रतिदान

2.7.9 घटवार

2.8 चील (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.8.1 दुर्गावाहिनी

2.8.2 कायर

2.8.3 बंद दरवाजा

2.8.4 मुक्ति

2.8.5 दशाह

2.8.6 बांट बखरा

2.8.7 अंतः पुर का सन्नाटा

2.8.8 शिकंजे

2.8.9 कायांतरण

2.8.10 चील

2.9 दो ध्रुवीय (कहानीसंग्रह) - कथ्य

2.10 नींव की पहली ईंट (लघुकथा संग्रह)-कथ्य

2.11 उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन

2.11.1 धन धरती

2.11.2 एक स्वप्नदर्शी की मौत

2.11.3 हमलावर

2.11.4 अपने भी

प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त कथासाहित्य की कृतियों का कथ्यगत अध्ययन करना है।

तृतीय अध्याय : विपिन बिहारी के साहित्य में दलित चेतना

3.1 रुढ़िग्रस्त धर्म के प्रति आक्रोश

3.2 संघर्ष चेतना

3.3 अस्मिता का अहसास

3.4 परंपरागत मूल्यों का नकार और नूतन मूल्यों का स्वीकार

3.5 दयादान नहीं, समान अधिकार का दावा

3.6 मुक्ति का संकल्प

3.7 शिक्षा से परिवर्तन

3.8 जातिवाद का विरोध

3.9 ईश्वर का नकार और मनुष्य का स्वीकार

3.10 अभौतिक जीवन का नकार, भौतिक जीवन का स्वीकार

3.11 विषमता का नकार और सामाजिक समता का स्वीकार

3.12 जुझारू दलित पात्र

3.13 पुरानी मिथ्यकों की आलोचना

3.14 दलित-सवर्ण संघर्ष

3.15 दलितों में अंतर्विरोध

3.16 दलित-सवर्ण में स्त्री-पुरुष संबंधों में विद्रोह

3.17 अस्पृश्यता की वेदना से विद्रोह

3.18 ऊँच-नीचता का नकार

3.19 अत्याचार से विद्रोह

3.20 भूख की पीड़ा

3.21 दलितों की आशाएँ

3.22 परंपरागत व्यवसाय के प्रति नकार

3.23 राजनीति के स्तर पर दलित चेतना

3.24 दलितों का संगठन

3.25 दलितों का आपसी वैमनस्य

3.26 समस्याओं से भरा दलित-जीवन

3.27 निर्धनता से ग्रस्त दलित जीवन

चतुर्थ अध्याय : विपिन बिहारी के कथासाहित्य में स्त्री-जीवन

4.1 बिहारी का स्त्रीविषयक दृष्टिकोण

4.2 इनकी कथासाहित्य में स्त्री के विविध रूप

4.2.1 स्त्री का व्यक्तित्व

4.2.2 त्यागमयी स्त्री

4.2.3 बलात्कारित स्त्री

4.2.4 दयनीय स्त्री

4.2.5 स्वाभिमानी स्त्री

4.2.6 विधवा स्त्री

4.2.7 पतीव्रता स्त्री

4.2.8 पुरातन विचारों और बंधनों को तोड़ती स्त्री

4.2.9 नौकरीशुदा स्त्री

4.2.10 पीड़ित स्त्री

4.2.11 विद्रोही स्त्री

4.2.12 भोगवादी स्त्री

4.2.13 समाजसेविका स्त्री

4.2.14 न्यायप्रिय स्त्री

4.3 निम्न वर्ग की स्त्री

4.4 मजदूर वर्ग की स्त्री

4.5 कृषक वर्ग की स्त्री

4.6 दलित वर्ग की स्त्री

4.7 सुशिक्षित और अशिक्षित स्त्री का संघर्ष

4.8 नारी मुक्ति की सीमाओं को लांघती स्त्री

4.9 घर परिवार की दिवारों को तोड़ती स्त्री

4.10 लज्जा के घुंघट को छोड़ती स्त्री

4.11 स्त्री का संघर्षमय जीवन

4.12 राजनीति के क्षेत्र में स्त्री

4.13 भूख से पीडित स्त्री

4.14 बिनब्याही माँ

4.15 स्त्री और पुरुष का संघर्षमयी जीवन

पंचम अध्याय : विपिन बिहारी के कथासाहित्य का शिल्पगत अध्ययन

5.1 कथासाहित्य और शिल्प

5.2 वस्तुविन्यास

5.2.1 वस्तुविन्यास में कथाशों का संबंध

5.2.2 मुख्य कथा की परस्पर संबंधता

5.2.3 कथानक में बिखराव

5.3 कथाओं में शैलीगत प्रयोग

5.3.1 वर्णनात्मक शैली

5.3.2 काव्यात्मक शैली

5.3.3 व्यंग्यात्मक शैली

5.3.4 विश्लेषणात्मक शैली

5.3.5 चेतनात्मक शैली

5.3.6 वैचारिक शैली

5.3.7 कथनात्मक शैली

5.4 चरित्र

5.4.1 कार्योंद्वारा चरित्र-चित्रण

5.4.2 अन्य पात्र द्वारा चरित्र-चित्रण

5.4.3 स्वगत कथन द्वारा चरित्र-चित्रण

5.4.4 गूढ चरित्र

5.4.5 सपाट चरित्र

5.5 प्रतिमा

5.6 परिवेश

5.7 भावानुकूल भाषा

5.8 पात्रानुकूल भाषा

5.9 प्रवाहमय भाषा

5.10 गालियाँ

5.11 मुहावरें और लोकोक्तियाँ

5.12 आँचलिक भाषा

5.13 भाषाशिल्प

षष्ठ्म अध्याय : मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

आधार ग्रन्थ सूची :-

कहानीसंग्रह :

1) ‘अपना मकान’- संजय प्रकाशन, रामपुर डुमरा, पटना, प्रथम संस्करण-1995

2) ‘पुनर्वास’- कामना प्रकाशन, ईस्ट ऑफ लोनी रोड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1999

3) ‘आधे पर अंत’-अतिश प्रकाशन, हरिनगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2001

4) ‘राजमार्ग पर गोलीकांड’- विभोर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2004

5) ‘चील’ - विभोर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2004

6) ‘आगे रास्ता बंद है’ - लोकमित्र प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली, प्रथम संस्करण-2012

7) ‘तिलस्म’- सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013

8) ‘बोझमुक्त’ - अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2014

9) ‘दो ध्रुवीय’- सम्यक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2015

लघुकथासंग्रह

1) ‘नींव की पहली ईंट’-बेधडक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2015

उपन्यास साहित्य :

1) ‘एक स्वप्नदर्शी की मौत’ - जाहनवी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2007

2) ‘धन धरती’ - दुसाध प्रकाशन, कल्याणपुर, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2012

3) ‘हमलावर’- श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013

4) ‘अपने भी’ - स्वराज प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2015

शोधछात्रा *शोध-निर्देशक*

सुलक्षणा जिरोबे **डॉ.मनोहर भंडारे**